एक परिचय
तीतुस

जैक एम. शार्न लिखता है:
यदि शाही नियम और अनुग्रह से ...
परमेश्वर एक सृष्टि की योजना बना सकता है
और पृथ्वी के ग्लोब को घुमा सकता है
इसके मार्गों का निर्देशन करके, इसे चला सकता है
तो यकीनन उसने जीवन के पथ की योजना बनाई है
ताकि मनुष्य अकेला न रहे!
हां, अज्ञात विशालता के पार
वह जीवन की दौड़ का निर्देशन करता और इसे बनाता है।[1]

तीतुस के नाम पौलुस की पत्री का अध्ययन आरम्भ करने वाले के लिए परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध की यह काव्य प्रस्तुति एक उपयुक्त सोच है।

उद्देश्य

यह पत्री हमें परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध को काम करते हुए सामर्थ और व्यावहारिक प्रदर्शन दिखाती है। तीतुस को दिए पौलुस के काम से पता चलता है कि *स्थानीय मण्डलियों को बनाने के लिए एक सुसमाचार प्रचारक को कैसे काम करना है।* ''इस लिए'' (तीतुस 1:5) पौलुस ने तीतुस को क्रेते में छोड़ा था।

पत्री का हर पहलू सदस्यों के परिपक्व होने की ओर आगे बढ़ता है (1:5-9)। इसमें *घर* (1:10, 11; 2:5, 6), *समाज* (1:12, 15, 16), और *कलीसिया* (3:9-11) में गड़बड़ी करने वालों के साथ निपटने के मार्गदर्शन देते हुए, अलग-अलग वर्गों और गुटों के साथ व्यवहार बताया गया है (2:1-10)। हर युग में मण्डलियों में अलग-अलग वर्गों और गुटों के लोग होंगे। इस प्रकार यह पत्री सबको मसीह यीशु में ऊंचे किए गए मापदण्ड तक आने की चुनौती देती है (2:11-14; 3:3-6), जिसमें सचमुच ''अनन्त जीवन की आशा'' मिलती है (1:2; 3:7)।

तीतुस को क्रेते में *एक काम* के लिए छोड़ा गया था और वह काम *देह को बनाना* था। आज स्थानीय मण्डलियों में आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता के लिए व्यापक

औजार ढूंढ़ना सुसमाचार प्रचारकों को व्यर्थ लगेगा।

पौलुस के तीन पत्रों, 1 व 2 तीमुथियुस और तीतुस को 18वीं सदी से ही पास्टरल एपिस्टल्स अर्थात पासबानी के पत्रों के रूप में जाना जाता है। 1703 में डी. एन. बडौट ने तीतुस को ''पास्टरल एपिस्टल'' कहा, परन्तु जैसा कि सी. माइकल मॉस ने अवलोकन किया, ''वास्तव में तीनों पत्रियों में से किसी में भी 'पास्टर' या इसके समान शब्द 'चरवाहा' नहीं मिलता है। ... ये पत्रियां वास्तव में पास्टरल थियोलॉजी के लिए पुस्तक नहीं हैं। इन पुस्तकों के केवल एक भाग में ही उपदेशक के लिए शिक्षा कहा जा सकता है (1 तीमुथियुस 3:1-13; 5:3-22; तीतुस 1:5-9)।''[2]

जगह और लोग

क्रेते के टापू के लोगों के बारे में सब लोग जानते थे। क्रेते वासी प्रसिद्ध लोग थे। विलियम बार्कले लिखता है:

> प्राचीन संसार में क्रेते के लोगों से बुरा नाम किसी का नहीं था। प्राचीन संसार में क (c's) के तीन सबसे बुरे नाम थे - क्रेते के लोग, किलिकिया के वासी, और कप्पदुकिया के लोग। क्रेते के लोग शराबी, गुस्ताख़, भरोसे के अयोग्य, झूठे, पेटू लोगों के रूप में जाने जाते थे। ...
>
> क्रेते के लोग इतने बदनाम थे कि यूनानियों ने उनके नाम से एक क्रिया शब्द kretizein, अर्थात to cretize बना लिया था, जिसका अर्थ है *झूठ बोलना और धोखा देना; ...*[3]

कलीसिया के आस - पास के संसार से आगे भी समस्या यह थी कि कलीसिया भी बुरे प्रभावों से प्रभावित थी। मैरिल सी. टैनी लिखता है:

> क्रेते की गड़बड़ी का कारण यहूदी शिक्षा देने वाले गुट द्वारा (1:10) जो श्रद्धाहीन (1:16), बेलगाम (1:10), फूट डालने वाले (1:11) और धन के भूखे थे (1:11) फैलाई गई कथा-कहानियों और आज्ञाओं पर झगड़े से नैतिकता में आई गिरावट था जो क्रेते वासियों की पहचान था। शिक्षा देने वाले ये लोग उन लोगों से भिन्न थे जिन्होंने नैतिकता में गिरावट के कारण गलती की थी, जबकि गलतियां के लोग कठोरता से व्यवस्था को मानने वाले थे। इस पत्री के द्वारा दोनों की निंदा की गई है।[4]

विक्टर ई. होवन ने ध्यान दिया कि तीतुस 1:10-14 ''उनके चरित्र और आचरण'' का वर्णन करता है ''जिसकी पुष्टि यूनानी एप्पिमिनाड्स द्वारा की गई थी और पौलुस ने उसे माना। 15, 16 में उनके मन और विवेक की स्थिति दी गई है। मत्ती 15:19, 20 देखिए।

परिश्रम करने के लिए कितना अच्छा खेत है!''[5]

उस टापू पर कलीसिया की शुरुआत कैसे हुई इसका स्पष्ट पता नहीं है। एच. सी. थियसन ने प्रेरितों 2:11 (पिन्तेकुस्त के दिन) को क्रेते के लोगों में मसीहियत का परिचय करने के सम्भावित स्रोत के रूप में माना। इसके अलावा पौलुस भी रोम जाते समय थोड़ी देर के लिए वहां रुका था। (प्रेरितों 27:7-13, 21)।[6]

इसकी शुरुआत कभी भी हुई हो, परन्तु लोगों की आवश्यकताएं पौलुस द्वारा परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त अपनी पत्री के बुने हुए विचारों और मुख्य शब्दों से स्पष्ट लगती है। *आवश्यकताओं* के साथ *समाधानों* की तुलना करते हुए वातावरण और पत्री के बीच तुलनाओं पर ध्यान दें।

नैतिक और आत्मिक समस्याओं के वातावरण के लिए, पौलुस ने एक शानदार और पर्याप्त *उद्धारकर्ता* के बारे में बताया (1:3, 4; 2:10, 11, 13; 3:4, 6)। इस प्रकार किसी भी खोए हुए समाज को *आशा* दी जाती है।

''निरंकुश, बकवादी और धोखा देने वाले'' (1:10) लोगों के लिए दवाई की अच्छी खुराक के रूप में पौलुस ने खरी शिक्षा का सुझाव दिया (1:9, 13; 2:1, 2, 10)। वह खरी शिक्षा ''संवेदनशील'' लोगों द्वारा सम्भाली जानी चाहिए। (1:8; 2:5, 6, 12), जो आम लोगों के चरित्र पर काबू पाकर ''अपने ही काम करने'' से ऊपर उठकर अपने पर काबू पाकर ''भक्ति'' दिखाने वाले हों (1:1; 2:12; 1 तीमुथियुस 2:2, 10; 3:16; 4:7, 8; 6:3, 5, 6, 11; 2 तीमुथियुस 3:5)।

अच्छी तरह ग्रहण कर लिए जाने के बाद खरी शिक्षा लोगों को ''आलसी पेटू'' होने से दूर करके (तीतुस 1:12) ''भले भले कामों में सरगर्म'' होने में अगुआई देगी (2:14; देखिए 1:16; 2:3, 7; 3:1, 8, 14)।

पौलुस ने लालची, स्वाग्रही, आज्ञा देने वाले, द्वेष रखने वाले यहूदी शिक्षा पर ज़ोर देने वालों से सावधान रहने को कहा (1:9-11, 14; 2:8; 3:2, 9, 10)। उसने समझाया कि जोश ''अधीनता'' के आधार पर होना चाहिए (2:5, 9; 3:1)।

संक्षेप में, क्रेते के दुष्ट लोगों को (1:12) इस पत्री के द्वारा *अच्छे बनने* और *अच्छे काम करने* का आग्रह किया गया था (1:16; 2:3, 7, 10, 13; 3:1, 8, 14)।

लोगों की आवश्यकताओं को परमेश्वर की और शिक्षा देकर चुनौती दी गई थी। वाल्टर डनेट ने इस पत्री में पाए जाने वाले शिक्षा सम्बन्धी विचारों का अच्छा निष्कर्ष दिया है:

1. *परमेश्वर की शिक्षा।* वह अनादि है (1:3), वह अनुग्रह और शांति देता है (1:4), उसने अपने आप को प्रकट किया है (2:11) और वह हमारा उद्धारकर्ता है (3:4)। पौलुस उसका सेवक था (1:1)। (घमण्डी लोगों को परमेश्वर के सामने झुक जाना चाहिए।)

2. *मसीह की शिक्षा।* वह हमारा उद्धारकर्ता है (1:4; 2:13; 3:6)। ध्यान दें कि परमेश्वर और मसीह को एक ही शीर्षक दिया गया है। मसीह के परमेश्वर होने की गवाही के रूप में 2:13 का वाक्य विशेष तौर पर महत्वपूर्ण है।[7] (देह में परमेश्वर का होना मनुष्य

को गोद लेने के लिए मापदण्ड ठहराता है जिससे शिक्षा की सजावट होती है; 3:10)।

3. *पवित्र आत्मा की शिक्षा।* वह नया जन्म दिलाने वाला है (3:5)। (अनुग्रह का संदेश पाप में गिरे हुए मनुष्य को फिर से जन्म लेने की पेशकश करता है।)

4. *परमेश्वर के वचन की शिक्षा।* परमेश्वर ने सुनाए गए संदेश (यू.: *kerygma*) में अपना वचन दिखाया है और जीवन के लिए यही मापदण्ड होना था (1:3; 2:5, 10)। 1:9 में इसे ''विश्वास योग्य'' कहा गया है। परमेश्वर के वचन की सही शिक्षा पर ज़ोर देने पर (1:9; 2:1, 7) ध्यान दें। इसके साथ कथा-कहानियों के विरुद्ध चेतावनी जुड़ी है, जो स्पष्टतया यहूदियों की अध्यात्मवादी शिक्षा है (1:10, 14; 3:9)। (मनुष्यों की कथा कहानियों के विरुद्ध कठोरता से ईश्वरीय आदेश दिए गए हैं।)

5. *(स्थानीय) कलीसिया की शिक्षा।* प्रेरितों ने अधिकार के साथ लिखा (1:1, 3), और तीतुस ने अधिकार के साथ ही बोलना, डांटना और सुधारना था (2:15)। प्राचीनों के लिए शर्तें बताने के साथ-साथ (1:6-8) उनके कर्ज़व्य भी बताए गए (1:9)। 2:1-3:2 में विश्वासियों की ज़िम्मेदारियों की रूपरेखा दी गई है।[9] (मानवीय विकास के लिए ईश्वरीय निर्देशों को सुनना और मानना आवश्यक है।)

शिक्षा सम्बन्धी यह समीक्षा किसी मण्डली के जीवन में, चाहे वह कहीं भी रहती हो और जिसने अपने आप को अशुद्ध न किया हो ईश्वरीय आदेश के द्वारा ईश्वरीय और मनुष्य के सुन्दर मेल करते हुए तीतुस के नाम पौलुस की पत्री की व्यावहारिक प्रकृति को दिखाता है। ऐसी सम्भावना से परमेश्वर के लोगों को किसी भी दृश्य में शुद्ध बनने और एक आदर्श ठहराने के लिए प्रेरित होना चाहिए।

समय

बाइबल से जुड़े रिकॉर्ड से यह स्पष्ट है कि पौलुस को रोम में पहली कैद से छोड़ दिया गया था जिसका उल्लेख प्रेरितों के काम में मिलता है (28:16-31; देखिए फिलिप्पियों 2:24; 4:22)। छूट जाने से थोड़ी देर पहले उसे उम्मीद थी कि वह तीमुथियुस को फिलिप्पी में भेजेगा (फिलिप्पियों 2:19-23)। छूटने के बाद, पौलुस क्रेते से होते हुए एशिया माइनर की ओर चल दिया (जैसे उसकी योजना थी; देखें फिलेमोन 1, 10, 22)। वहां उसने तीतुस को छोड़ दिया (तीतुस 1:5)। योजना के अनुसार, पौलुस उनेसिमुस के बारे में फिलेमोन को समझाने के लिए कुलुस्से में चला गया। इस समय के दौरान कभी, तीमुथियुस फिलिप्पी से जाकर पौलुस से इफिसुस या मिलेतुस में मिला। पौलुस ने मकिदुनिया को जाते समय तीमुथियुस को इफिसुस में छोड़ दिया (1 तीमुथियुस 1:3)। मकिदुनिया से कहीं पौलुस को इफिसुस के इलाके में लौटने की उम्मीद थी, परन्तु उसे मालूम था कि उसे देर हो सकती है (1 तीमुथियुस 3:14, 15)। उसी समय उसने 1 तीमुथियुस और तीतुस लिखे। उसकी यात्रा की योजनाएं बदल गईं, क्योंकि उसने तीमुथियुस को आयोनियन सागर के पूर्वी तट पर ऐपिरुस में निकुपुलिस नामक जगह के पूर्वी तट पर मिलने का अग्रह किया। ''वह अभी

निकुपुलिस में नहीं पहुंचा था (3:12)। सर्दी वहां ('यहां' नहीं) बिताने के उसके फैसले से लगता है कि वह गर्मी के अंत या पतझड़ के आरज़्भ में लिख ही रहा था।''[9] विलियम हैंड्रिज़्सन ने अवलोकन किया, ''इसका समय 63 ईस्वी से अधिक बाद नहीं हो सकता।''[10] पौलुस 64 ईस्वी में नीरो के सताव के कारण जेल से नहीं छूटा हो सकता।[11]

पाने वाला

हम तीतुस अर्थात उस प्रचारक के बारे में जिसे यह पत्र मिला था ज़्या जानते हैं? लूईस सी. पोस्टर ने कहा, ''तीतुस के माता-पिता और घर के लोगों का कोई पता नहीं था। परन्तु यह स्पष्ट है कि वह एक अन्यजाति था; वह सूरिया के अन्ताकिया में पौलुस के मसीही बनने के चौदह या सतरह वर्ष तक रहा (देखें गलातियों 1:18; 2:1)।'' इसके बाद वह पौलुस का एक पज़्का साथी बन गया, जिसे प्रेरित ने महत्वपूर्ण काम देकर उसे उच्च स्थान पर महिमा दी।[12]

प्रेरितों के काम की पुस्तक में तीतुस का नाम नहीं मिलता, परन्तु नये नियम में यह तेरह बार और मिलता है: 2 बार गलतियों में (2:1; 2:3), एक बार 2 तीमुथियुस (4:10) में, एक बार तीतुस (1:4) में, नौ बार 2 कुरिन्थियों में (2:13; 7:6, 13, 14; 8:6, 16, 23; और दो बार 12:18 में)। तीतुस का संकेत देता पहला हवाला प्रेरितों के काम की पुस्तक में मिलता है, यद्यपि वहां उसका नाम नहीं है: प्रेरितों 15:2 (''कितने'') की तुलना गलतियों 2:1, 3 (''... तीतुस को भी साथ ले गया। ... परन्तु तीतुस भी जो मेरे साथ है'') के साथ करने पर हमें पता चलता है कि तीतुस पहली मिशनरी यात्रा के बाद पौलुस और बरनबास के साथ था। जब उन्हें कलीसिया की सहायता के लिए यरूशलेम में भेजा गया तो अन्यजाति मसीहियों के खतने का प्रश्न उठा, तो उनके साथ ''कितने'' लोग थे जिनमें तीतुस भी था।[13] इस प्रकार तीतुस खतने के प्रश्न के सज़्बन्ध में ''प्रकट'' हो गया और पौलुस ने उसके द्वारा एक स्टैण्ड लिया जिससे मसीह में सुसमाचार की स्वतन्त्रता खत्म न हो (देखें प्रेरितों 15:1-29; गलतियों 2:3-5)।

तीतुस कुरिन्थुस की परेशान कलीसिया के लिए एक विशेष दूत था (देखिए 2 कुरिन्थियों 2:13; 7:5-14; 12:17, 18) जिसने पौलुस की ओर से शांति की बात कही। स्पष्टतया पौलुस तीतुस द्वारा दी गई किसी भी रिपोर्ट को विश्वासयोग्य मानता था। इसके अलावा तीमुथियुस में भरोसा साफ़ दिखाई देता है कि उसे यरूशलेम में निर्धनों की सहायता के लिए चन्दा इकट्ठा करने के लिए चुना गया था (2 कुरिन्थियों 8:6-24)।

पौलुस ने तीतुस को क्रेते में छोड़ दिया, ताकि वह ''रही बातों को सुधारे, और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर नगर प्राचीनों को नियुज़्त करे'' (1:5)।[15] बाद में तीतुस की ज़रूरत निकुपुलिस में पड़ी और दूसरे कारावास के दौरान वह पौलुस के साथ रोम में था जहां से उसने उसे दलमतियाह भेजा (3:12; 2 तीमुथियुस 4:10)।

ये सभी काम तीतुस का परिचय ऐसे व्यज़्ति के रूप में कराते हैं जिस पर पौलुस ''कलीसिया

की समस्याओं को सुलझाने'' जैसे कठिन दायित्व देने के लिए भरोसा कर सकता था। उस पर धन या भावनाएं सौंपने का भरोसा किया जा सकता था। वह लोगों को बनाने वाला, एक संगठनकर्ता और शुरुआत करने वाला व्यक्ति था जिसे, किसी जगह पर छोड़ देने पर, कोई काम हाथ में लेने के लिए दिया जा सकता था। तीतुस के महान उदाहरण से, किसी भी सुसमाचार प्रचारक को इस बात पर रुककर अपने आप से चार प्रश्न पूछने चाहिए:

1. आप आलोचना का सामना कितनी अच्छी तरह से कर सकते हैं (गलतियों 2:3-5; प्रेरितों 15:1-29)?

2. क्या आप बिल्कुल सही और विश्वासयोग्य रिपोर्ट दे सकते हैं (या देंगे) कि दूसरों ने क्या किया है या क्या कर रहे हैं?

3. क्या हर नगर में ऐल्डर नियुक्त करने की बात से आप रह गई बातों को सुधार सकते हैं (1:5)? संगठनात्मक स्तर पर प्रभु का काम बहुत सी मण्डलियों में अभी भी अधूरा है।

4. क्या आप पर चन्दा और धन को सम्भालने के लिए विश्वास किया जा सकता है (2 कुरिन्थियों 8:6, 16-21, 23, 24)? सुसमाचार प्रचारकों द्वारा तीतुस को दिए गए मापदण्ड के अनुसार नहीं ढाल पाने से केवल प्रभु ही जानता है कि मण्डली के जीवन और विकास में कितना नुक़्सान हुआ है।

जिम्मेदारी के ऐसे कामों को देखकर जैसे पौलुस ने तीतुस को दिए, हैरानी की बात नहीं है कि पौलुस ने तीतुस को ''विश्वास की *सहभागिता* के विचार से मेरा *सच्चा* पुत्र'' (1:4) कहा। कई तरह से पौलुस और तीतुस ''एक ही आत्मा के चलाए'' चलते थे (देखिए 2 कुरिन्थियों 12:18)। जहां तक मसीह के लोगों तथा उसके काम की बात है पौलुस ने लोगों से दृढ़ता से कहा कि तीतुस के मन में ''उत्साह''[16] डाल दिया था (2 कुरिन्थियों 8:16, 17)। परवाह करने वाले मन ने लगन के साथ मिलकर, बुद्धि के साथ तीतुस को कठिन परिस्थितियों का सामना करने के लिए पौलुस और प्रभु के साथ एक बहुमूल्य सहकर्मी बना दिया।

कोई भी सुसमाचार प्रचारक तीतुस के जीवन और काम का सावधानीपूर्वक अध्ययन करके ''जा और तू भी ऐसा ही कर'' करके अच्छा करेगा! अब जबकि हमें पता चल गया है कि यह पत्री क्यों लिखी गई थी, किसके लिए लिखी गई थी, और किसे लिखी गई थी, तो आओ *जो* लिखा गया था हम उसका सावधानीपूर्वक अध्ययन करने के लिए आगे बढ़ें। तीतुस को लिखते हुए पौलुस ने कई लोगों, स्थानों और धारणाओं का उल्लेख किया जिनकी व्याख्या की आवश्यकता हो सकती है। आइए पुस्तक का अध्ययन आरम्भ करने से पहले इन पर कुछ ध्यान दें।

तीतुस की पत्री में वर्णित

अपुल्लोस

''जेनास व्यवस्थापक और अपुल्लोस को यत्न करके आगे पहुंचा दे, और देख, कि

उन्हें किसी वस्तु की घटी न होने पाए'' (तीतुस 3:13)।

ज़्योंकि इस आदमी में और प्रेरितों 18 और 19 वाले बातचीत करने में तेज सिकंदरिया के यहूदी शिक्षक में कोई अन्तर नहीं किया गया, इसलिए हम मान लेते हैं कि यह अपुल्लोस वही आदमी है। इसका वर्णन प्रेरितों 18:24; 19:1; 1 कुरिन्थियों 1:12; 3:4-6; 3:22; 4:6; 16:12 में भी मिलता है।

अरतिमास

''जब मैं तेरे पास अरतिमास या तुखिकुस को भेजूं, तो मेरे पास नीकुपुलिस आने का यत्न करना: ज़्योंकि मैं ने वहीं जाड़ा काटने की ठानी है'' (तीतुस 3:12)।

पौलुस के इस साथी के बारे में और अधिक पता नहीं चलता ज़्योंकि उसका उल्लेख केवल यहीं पर ही मिलता है।

तीतुस

''तीतुस के नाम जो विश्वास की सहभागिता के विचार से मेरा सच्चा पुत्र है: परमेश्वर पिता और हमारे उद्धारकर्ज़ा मसीह यीशु से अनुग्रह और शान्ति होती रहे'' (तीतुस 1:4)।

तीतुस पन्द्रह या इससे अधिक वर्षों से पौलुस का मित्र और अति सज़्माननीय, भरोसेमंद सहकर्मी था। प्रेरितों के काम में उसके नाम का उल्लेख नहीं मिलता, यद्यपि गलतियों 2:3 इस बात की पुष्टि करता है कि तीतुस का नाम प्रेरितों 15:2 में है जहां ''कितने'' का उल्लेख है। यरूशलेम की कॉन्फ्रेंस के दौरान यहूदी और अन्यजाति मसीहियों की संगति के बीच यहूदी शिक्षा थोपने वालों के ज़ोर देने के समय इसका उल्लेख गलतियों 2:3 में मिलता है।

तीतुस एक अन्यजाति था। किसी अन्यजाति के लिए अब्राहम के साथ खतने की वाचा (उत्पज़ि 17) पूरी करने के लिए यहूदी खतने की आवश्यकता नहीं थी, ज़्योंकि यह वाचा इब्रानी लोगों के साथ और उनके लिए थी। मसीही सुसमाचार में किसी के खतने की आवश्यकता नहीं थी। इसलिए ऐसा कोई आधार नहीं था जिस पर कोई ऐसे संस्कार को मानने के लिए तीतुस पर शर्त लगा सके। व्यवस्था को मानने वालों के विरुद्ध यह एक प्रमुख प्रमाण है।

तीतुस ने फिलिप्पी, थिस्सलुनीके, बिरिया, कुरिन्थुस और दलमतियाह की कलीसियाओं के साथ काम किया था। बाइबल में उसका उल्लेख तेरह बार आता है, जिसमें आठ बार 2 कुरिन्थियों में ही है। जहां यह बिल्कुल स्पष्ट है कि उसने यहूदिया के पवित्र लोगों में निर्धनों के लिए राहत कोष इकट्ठा करने में सहायता की थी। 2 कुरिन्थियों लिखने से पहले कुरिन्थुस की स्थिति के बारे में जानने के लिए पौलुस तीतुस से मिलने इफिसुस से मकिदुनिया गया था।

तुखिकुस

''जब मैं तेरे पास अरतिमास या तुखिकुस को भेजूं, तो मेरे पास नीकुपुलिस आने का यत्न करना: ज़्योंकि मैंने वहीं जाड़ा काटने की ठानी है'' (तीतुस 3:12)।

तुखिकुस नामक एशिया माइनर के इस मसीही ने यूनान से यरूशलेम तक पौलुस का साथ दिया और पौलुस ने उसे इफिसुस, कुलुस्से और फिलेमोन में पत्रियां बांटने के लिए भेजा था। स्पष्टतया यही वह आदमी था जिसने कुलुस्सियों में वचन सिखाया था जो कुलुस्से में एक समस्या को सुलझाने के लिए पौलुस की सहायता कर रहा था। पवित्र शास्त्र में उसका उल्लेख पांच बार आता है (प्रेरितों 20:4; इफिसियों 6:21; कुलुस्सियों 4:7; 2 तीमुथियुस 4:12; तीतुस 3:12)।

जेनास

''जेनास व्यवस्थापक और अपुल्लोस को यत्न करके आगे पहुंचा दे, और देख, कि उन्हें किसी वस्तु की घटी न होने पाए'' (तीतुस 3:13)।

यह व्यवस्थापक (सम्भवत: यहूदी व्यवस्था का जानकार) किसी अज्ञात जगह के लिए अपुल्लोस के साथ जा रहा था। सम्भव है कि वे तीतुस के लिए यही पत्र ले जा रहे हों। पौलुस ने तीतुस से उनकी यात्रा में क्रेते से जाते हुए हर सम्भव सहायता करने का आग्रह किया।

तीतुस की पत्री में स्थानों का उल्लेख

क्रेते

''मैं इसलिए तुझे क्रेते में छोड़ आया था, कि तू शेष रही हुई बातों को सुधारे, और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर नगर प्राचीनों को नियुक्त करे'' (तीतुस 1:5)।

क्रेते भूमध्य सागर का चौथा बड़ा टापू है। यहां सबसे प्राचीन और अति विकसित व्यापारिक सभ्यताओं में से एक का मूल है। नये नियम के समय में, नैतिकता में यह नगर काफी गिर चुका था (1:12)। तीतुस ने इस मूर्तिपूजक जगत में नई बनी कलीसिया के सामने पेश बातों में ''सुधार'' करना था।

नीकुपुलिस

''जब मैं तेरे पास अरतिमास या तुखिकुस को भेजूं, तो मेरे पास नीकुपुलिस आने का यत्न करना: क्योंकि मैं ने वहीं जाड़ा काटने की ठानी है'' (तीतुस 3:12)।

यह ''विजय का नगर'' यूनान के उत्तर पश्चिमी तट पर स्थित था जहां पौलुस ने सम्भवत: 65-66 ईस्वी में जाड़ा गुज़ारने का मन बनाया था। उसने तीतुस से क्रेते में अपना काम पूरा कर लेने के बाद वहां आने का आग्रह किया। क्योंकि निश्चित तौर पर यह वह अंन्तिम स्थान है जहां पौलुस जाना चाहता था इसलिए कुछ लोगों का मानना है कि उसकी दूसरी गिरफ्तारी यहीं हुई।

तीतुस की पत्री में मुख्य विचारधारा

शिक्षा

सब मसीही लोगों को सही जानकारी देना पौलुस के मन में इतना महत्वपूर्ण था कि उसने ''शिक्षा'' शज़्द का बार - बार इस्तेमाल किया। इस पत्री में ''शिक्षा'' के समानार्थक शज़्दों के रूप में ''कहा कर'' और ''सुधि दिला'' का इस्तेमाल किया गया है।

पाद टिप्पणियां

[1]एल्बर्ट एम. वैल्स, जू., *इन्सपाइरिंग कुटेशन्स* (नैशविल्ले: थॉमस नैल्सन पज़्लिशर्स, 1988), 59. [2]सी. माइकल मॉस, *द कॉलेज प्रैस एनआईवी कमैन्ट्री, 1, 2 तिमोथी एण्ड टाइटस* (जॉपलिन, मौ.: कॉलेज प्रैस पबलिशंग कं 1994), 11-12. विलियम बार्कले, *द लैटर्स टू तिमोथी, टाइटस एण्ड फिलेमोन,* द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़, संशो. संस्क. (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1960), 277. [4]मैरिल सी. टैनी, *न्यू टैस्टामेंट सर्वे* (लंदन: इंटरवर्सिटी फैलोशिप, 1964), 336. [5]विज़्टर इ. होवन, *द न्यू टैस्टामेंट एपिस्टल्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1959), 98. [6]एच. सी. थियेसन, *इंट्रोडज़्शन टू द न्यू टैस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स मिशी.: Wm. B. इर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1955), 264. [7]*थियोलॉजी टुडे,* अप्रैल, 1953 में ब्रूस मैज़गर के लेख ''द यहोवा'स विटनेस एण्ड जीज़स क्राइस्ट'' में इस पद से की गई व्याज़्या बहुत अच्छी तरह से की गई है। [8]वाल्टर डन्नेट, *ऐन आउटलाइन ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट सर्वे* (शिकागो: मूडी प्रैस, 1960), 129-31. [9]रोनल्ड ए. वार्ड, *कमैन्ट्री ऑन 1 एण्ड 2 तिमोथी एण्ड टाइटस* (वैको, टैज़्स.: वर्ड बुज़्स पज़्लिशर, 1974), 227. [10]विलियम हैंड्रिज़्सन, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल्स टू तिमोथी एण्ड टाइटस* (लंदन: द बैनर ऑफ़ ट्रुथ ट्रस्ट, 1957), 39. [11]पौलुस की अन्तिम यात्राओं और तीतुस के लिए समय को विस्तारपूर्वक जानने के लिए पुस्तक के आरज़्भिक नोट्स देखें। [12]डॉन डिवेल्ट, *पॉल'स लैटर्स टू तिमोथी एण्ड टाइटस* (जॉप्लिन, मौ.: कॉलेज प्रैस, 1961), 20. [13]हैंड्रिज़्सन, 37. [14]डन्नेट, 128. [15]कुछ लोग तीमुथियुस की कायरता और तीतुस के दृढ़ स्वभाव के रूप में इन वाज़्यों से छेड़छाड़ करते हैं (डन्नेट, 126; थियसन, 263, 266; टैनी, 334-37)। पहली बात, पौलुस ने ऐसी तुलनाओं की वकालत नहीं की (देखिए 2 कुरिन्थियों 10:12, 13)। दूसरा, तीतुस में हिचकिचाहट देखी जा सकती है ज़्योंकि पौलुस ने उसे क्रेते में काम के सज़्बन्ध में ''आज्ञा'' दी और उससे ''पूरे अधिकार के साथ ये बातें कहने'' का आग्रह किया। ''कोई तुझे तुच्छ न जानने पाए'' (तीतुस 1:5; 2:15)। किसी भी सुसमाचार प्रचारक को जिसके सामने ये काम होंगे एक तरफ तो बड़ी सामर्थ की आवश्यकता होगी और दूसरी ओर संयम की जिसकी आज्ञा पौलुस ने अभी दी थी। हमारी आवश्यकता एक जैसे व्यज़्तित्वों के आमने सामने आ जाने पर अन्तर निकालना नहीं है। हमारी आवश्यकता यह पता लगाना नहीं है कि ऐसी किसी परिस्थिति में किसी को खतना करने के लिए विवश होने पर ज़्या करना पड़ा था। हमारी आवश्यकता उनके व्यज़्तित्वों में अन्तर ढूंढ़ना नहीं बल्कि ऐसी परिस्थितियों का सामना होने पर उन्हें भूल जाना है। [16]विश्वासयोग्य (यू.: *spoude*) - ''उतावला, ... गंभीर ... कुछ भी करने की कोशिश करने वाला ... अपनी बात के लिए गंभीरता से रुचि लेना, यहूदा 3 ... 2 पतरस 1:5 ... 2 कुरिन्थियों 8:16'' (सी. जी विल्के एण्ड विलिबल्ड ग्रिज़्म, *ए ग्रीक इंग्लिश लैज़्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. व संशो. जोसेफ एच. थेयर [एडिनबर्ग, स्कॉटलैण्ड: टी. एण्ड टी. ज़्लार्क, 1901; रीप्रिंट संस्क., ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1977], 585)।